Mardi 29 janvier 2013

HIN2B09b

(Compréhension de l'écrit)

Cours – 1

हिन्दी ही दिलाएगी लाखों की नौकरी

25 वर्षीय ली कून दिल्ली विश्वविद्यालय में हिन्दी का छात्र है। उसकी आँखों में चमक है और उसका आत्मविश्वास सातवें आसमान पर। उसे बेइंतहा उम्मीद है कि महज चंद महीनों में दैवू, ह्यूंडई मोटर्स, सैमसंग, एलजी, पॉस्को, रेनॉल्ट जैसी आला दक्षिण कोरियाई कंपनियों में से किसी में भी नौकरी मिल जाएगी। उसकी सबसे बड़ी योग्यता एमबीए होना नहीं, बल्कि उसका हिन्दी ज्ञान है। ...

वास्तव में यह ट्रेंड किसी व्यक्ति विशेष के लिए हिन्दी की अहमियत को नहीं, बल्कि हिन्दी के बढ़ते बाजार और महत्व की कहानी बयाँ करता है। अंग्रेजी की बादशाहत भले ही हमें यह सोचने पर मजबूर करती हो कि वही बाजार की कुंजी है और अवसरों के संसार में प्रवेश उसी के जरिए संभव है, लेकिन यह सच का मात्र एक पक्ष है, और वह भी सिर्फ भारत के संदर्भ में। यूरोप, जिसे अंग्रेजी के गढ़ के रूप में देखा जाता है, की सबसे बड़ी और दुनिया की चौथी अर्थव्यवस्था जर्मनी में जर्मन भाषा और दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था फ्रांस में फ्रेंच भाषा में ही सारे काम होते हैं। ...

एशिया की सबसे बड़ी और दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था जापान में जापानी और दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था चीन में चीनी भाषा चलती है। इन देशों में विज्ञान और तकनीक से लेकर सरकार और अदालतें तक, सभी कुछ स्थानीय भाषाओं में चलते हैं। लेकिन भारत का मामला इसके उलट है। यहाँ की 95 प्रतिशत से अधिक लोग भले ही स्थानीय भाषा बोलते हों लेकिन बाबुओं की भाषा होने की वजह से अंग्रेजी अभी भी थोपी जा रही है। शासन-प्रशासन के तमाम कार्य (सरकारी महकमें और अदालती कार्य) अभी भी अंग्रेजी में ही होते हैं। यही वजह है कि आजादी के 62 साल बाद भी आम लोग अपनी शासन व्यवस्था और अदालती प्रक्रियाओं को नहीं जान पाए हैं।

लेकिन अब हालात बदल रहे हैं। हिन्दी का प्रभाव देश ही नहीं विदेशों में भी बढ़ रहा है। वैसे भी भारत में महज पाँच फीसदी लोग ही अंग्रेजी भाषी हैं। अगर आँकड़ों में देखें तो इनकी संख्या बमुश्किल पाँच करोड़ होगी। साफ है कि बाजार के लिए अंग्रेजी से अधिक महत्वपूर्ण है देश की बाकी लगभग एक अरब लोगों की भाषा। आखिर बाजार को उपभोक्ता चाहिए और उसका संबंध किसी भाषा से नहीं उपभोक्ताओं की जरूरतों और संसाधनों से है। इसीलिए बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ आज अंग्रेजी के अलावा स्थानीय भाषाओं को भी तवज्जो दे रही हैं। भारतीय बाजार में हिन्दी की अहमियत को इस बात से समझा जा सकता है कि सूचना-तकनीक की दुनिया की सबसे बड़ी हस्ती गूगल का मानना है कि आने वाले पांच सालों में भारत दुनिया का सबसे बड़ा इंटरनेट बाजार होगा और अगर इस बाजार में किसी को दबदबा बनाना है कि तो उसे हिन्दी में चीजें उपलब्ध करानी होगी। कंपनी का यह भी मानना है कि इंटरनेट की दुनिया में जिन तीन भाषाओं का दबदबा होगा, उनके नाम हैं- हिन्दी, मैंडरिन और अंग्रेजी। वास्तव में कंप्यूटिंग की भाषा अंकों की भाषा है और उसमें भी कंप्यूटर सिर्फ दो अंकों एक और जीरो को ही समझता है। ऐसे में यह मानना कि अंग्रेजी ही कंप्यूटर की भाषा है, भ्रम के सिवा कुछ नहीं है।...

अगर संख्या के लिहाज से देखें तो मैंडरिन भाषा जो चीन, ताइवान और मलेशिया में बोली जाती है, के बाद हिन्दी का ही स्थान है। अंग्रेजी बोलने वालों की संख्या दुनिया में महज 52 करोड़ है। जबकि हिन्दी बोलने वालों की संख्या 80 करोड़ से भी अधिक है। भारत ही नहीं बल्कि पड़ोसी देशों पाकिस्तान, बांग्लादेश और नेपाल समेत दुनिया के कई दर्जन देशों में हिन्दी भाषी लोग रहते हैं। भारतीय मूल के दो करोड़ से अधिक लोग विदेशों में रह रहे हैं और विदेशों में अंग्रेजी के प्रसार में उनका योगदान सराहणीय है। साफ तौर पर हिन्दी का दायरा लगातार बढ़ रहा है। पड़ोसी देश श्रीलंका में तो उसी तरह हिन्दी के कोर्स चलाए जा रहे हैं जिस तरह भारत में अंग्रेजी की कोचिंग चल रही है। यूरोपीय और अमेरिकी विश्वविद्यालयों में भी हिन्दी की पढ़ाई हो रही है। अमेरिका के 50 से अधिक विश्वविद्यालयों में बाकायदा हिन्दी विभाग खुल चुका है जहाँ सैंकड़ों छात्र हिन्दी की पढ़ाई कर रहे हैं। हिन्दी में उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों को विदेशी विश्वविद्यालयों में सहजता से लेक्चरर की नौकरी मिल रही है।

हिन्दी के विस्तार के मामले में भी मांग और पूर्ति का वही परंपरागत सिद्धांत लागू हो रहा है। लोगों तक पहुंच बनाने के लिए बाजार या कहें कंपनियों को जिस भाषा की जरूरत होगी, वही भाषा बाजार की भाषा होगी। और भारत में चूंकि अधिकांश लोग हिन्दी समझते हैं, इसलिए हिन्दी ही बाजार की भाषा हो सकती है। इस बात के सबूत हिन्दी फिल्म, हिन्दी के अखबार और वे हिन्दी माध्यम हैं जो दिन-दुनी और रात चौगुनी तरक्की कर रहे हैं। ...

विशेष | उमानाथ सिंह | शुक्रवार , 02 अक्टूबर 2009 (बिज़नेस भास्कर से साभार)

Mardi 29 janvier 2013

Vocabulaire et expressions

चमक (f) brillance, lueur
आत्मविश्वास (m) confiance en soi
आसमान (m) ciel
बेइंतहा sans limite
उम्मीद (f) espoir
महज, मात्र seulement
चंद quelques
योग्यता (f) compétence
ज्ञान (m) connaissance
वास्तव में en réalité
ट्रेंड (f) tendance
व्यक्ति m विशेष une personne en particulier
अहमियत (f) importance
बयाँ करता narrer, raconter
बादशाहत (f) règne
मजबूर करना contraindre
कुंजी (mf) clé
अवसर (mf) opportunité
पक्ष (m) côté
संदर्भ (f) contexte
गढ़ (m) château fort
चौथी quatrième
अर्थव्यवस्था (f) économie
विज्ञान (m) science
स्थानीय local
थोपना imposer
शासन (m) gouvernement
प्रशासन (m) administration
तमाम tous
महकमा (m) département
वजह (f) raison
आम लोग public en général
प्रक्रिया (f) procédure
हालात (m) circonstances
आँकड़ा (m) statistique
बमुश्किल avec difficulté

करोड़ (m) 10 million
महत्वपूर्ण important
अरब (m) milliard
उपभोक्ता (m) consommateur
संसाधन (m) ressource
बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ(f) multinationales
तवज्जो (f) देना faire attention à
अहमियत (f) importance
दबदबा (m) influence
उपलब्ध disponible
भ्रम (m) illusion
x के सिवा sauf x
लिहाज से au regard de
जबकि alors que
मूल (m) racine, origine
प्रसार (m) diffusion
योगदान (m) contribution
सराहणीय louable
दायरा (m) périmètre
कोर्स (m) cours
कोचिंग (f) coaching
बाकायदा systématiquement
सहजता (f) spontanéité
नौकरी (f) emploi
विस्तार (m) étendu
माँग (f) demande
पूर्ति (f) provision
परंपरागत traditionnel
सिद्धांत (m) principe
लागू होना appliqué
चूंकि puisque
अधिकांश pour la plupart
सबूत (m) preuve
माध्यम (m) moyen
तरक्की करना progresser